आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 9 मई, 2017 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

कुलपति सन्देश

वर्षा के अमृत जल का संरक्षण करने का संकल्प लें

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

राजस्थान में देश का 10 प्रतिशत भू–भाग है जिसमें जल की उपलब्धता मात्र 1 प्रतिशत है। हमारे यहां 10 प्रतिशत पशु हैं और कृषि में 83 प्रतिशत जल का उपयोग होता है। इस स्थिति में जल की उपलब्धता को बनाए रखने की चुनौती है। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने 2011–2020 को जल वर्ष घोषित किया है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आह्वान किया है कि वर्ष 2022 तक किसानों की आय को भी दोगुना करना है। राज्य में भू–जल स्तर में निरंतर गिरावट और मानसून की अनियमितता के कारण कृषि और पशुपालन पर जलीय दबाव का होना लाजिमी है। वर्षा जल का संरक्षण उपाय खेतों के फव्वारा और बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति का उपयोग और सीवरेज व अनुपयोगी जल के ट्रीटमेन्ट प्लांट लगाकर हमें कृषि और पशुधन की जलीय जरूरतों को पूरा करने के महत्ती प्रयास करने होंगे। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राज्य में महत्वाकांक्षी जल स्वावलम्बन योजना का सूत्रपात कर वर्षा जल संरक्षण कार्यों के प्रति लोगों को जागरूक करने के साथ ही जल स्त्रोतों की सार–संभाल का कार्य शुरू किया है। राज्य में इसके सुखद परिणाम मिलेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा बीकानेर स्थित 14 एकड़ भू–सतह के वर्षा जल सग्रंहण का राजुवास मॉडल बनाया गया है। इस परिसर में बरसाती पानी की एक–एक बूंद को संचित करने के लिए जल ग्रहण विकास कार्य करवाया है। इसके प्रथम चरण में विरासत कालीन बिजेय भवन पैलेस के 60 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में वर्षा जल को पाईप लाईन व फिल्टर चैम्बर के विशाल जल कुण्डों में एकत्रित किया जा रहा है। जिसमें साढ़े आठ लाख लीटर जल संचित होगा। विश्वविद्यालय में 9.5 लाख लीटर क्षमता वाले 5 आर.सी.सी. निर्मित भूमिगत टैंक हैं। ये सभी टैंक इमारतों की छतों से बारिश का पानी एकत्रित करने के लिए चैनलों के माध्यम से जुड़े हैं। इन टैंकों के पूरे भर जाने की स्थिति में अतिरिक्त साफ जल को एक सूखे कूएं की ओर मोड़ दिया जाता है जिससे भूमिगत जल का पुनर्भरण हो सके। सड़कों पर एकत्रित वर्षा जल के अपव्यय को रोकने के लिए सीमेन्ट ब्लॉक की दो बाक्स (दीवारें) बनाई गई हैं। मानसून का महीना शुरू होने को है, अतः आप अपने गांव और खेतों में वर्षा जल संग्रहण उपायों को लागू करने के प्रति सचेष्ट हो जाएं। हमें अमृत वर्षा जल की एक–एक बूंद को बचाकर काम में लेने का संकल्प लेना होगा क्योंकि यह समय की मांग है।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय गोपालन मंत्री श्री ओटाराम देवासी एवं गणमान्य अतिथियों द्वारा
पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही के भवन का लोकार्पण

मुख्य समाचार

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की रैकिंग में राजुवास फिर शीर्ष पर

राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के अल्पकाल में ही विश्वविद्यालयों की इन्डिया रैंकिंग 2017 में देश में शीर्ष और राजस्थान में प्रथम रैंकिंग में अपना स्थान बनाया है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा की गई रैंकिंग में इस बार वेटरनरी विश्वविद्यालय को 789 विश्वविद्यालयों में से **68वीं** रैंक प्राप्त हुई है। गत वर्ष की रैंकिंग में यह विश्वविद्यालय 97वें स्थान पर रहा था। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने एक वर्ष की अल्प अवधि में 29 विश्वविद्यालयों को पीछे छोड़ते हुए देशभर में नई रैंकिंग प्राप्त की है। रैंकिंग में राजस्थान राज्य के सभी 25 राजकीय विश्वविद्यालयों और 42 निजी विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय **प्रथम स्थान** पर रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि इस सर्वे के अनुसार देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय **तीसरे स्थान** पर रहा है।

डूंगरपुर में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र का हुआ शिलान्यास

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर में नए भवन का 4 अप्रेल को विधिवत भूमि पूजन कर शिलान्यास किया गया। राज्य सरकार ने इसके लिए ग्राम पंचायत कच्छवासा में वेटरनरी विश्वविद्यालय को 12 बीघा भूमि का निःशुल्क आवंटन किया है। समारोह के मुख्य अतिथि डूंगरपुर के विधायक श्री देवेन्द्र कटारा थे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर विधायक श्री कटारा ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय का केन्द्र खुलने से आदिवासी क्षेत्र के लोगों को पशुपालन के माध्यम से रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि अब वैज्ञानिक पशुपालन का समय आ गया है। इससे हम अपने पशुधन को अधिक उपयोगी बनाकर उत्पादन भी बढ़ा सकते हैं। इससे जिले के कृषकों और पशुपालकों को उन्नत पशुपालन तकनीकी और वैज्ञानिक रीति–नीति से पशुधन उत्पादन को बढ़ाने के लिए समुचित प्रशिक्षण की सुविधा इसी परिसर में मिलनी शुरू हो जायेगी। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि इस केन्द्र में कृषक और पशुपालकों के लिए एक प्रशिक्षण हॉल, आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला, व्याख्यान कक्ष, आवासीय सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। समारोह में वेटरनरी कॉलेज नवानियां के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. नागदा, निदेशक कार्य एम. राम सहित कपिल आनन्द, रमेश जैन, आशीष आनन्द, उपसरंपच बंशी, डॉ. परमाल सिंह, डॉ. घनश्याम कोली व नवानियां के विशेषज्ञ शामिल हुए। इस अवसर पर आयोजित कृषक पशुपालक गोष्ठी में 200 पशुपालकों ने भाग लिया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही के नए परिसर का लोकार्पण

गौपालन राज्य मंत्री श्री ओटाराम देवासी ने 10 अप्रेल को वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र सिरोही के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण किया। समोराह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने की। इस अवसर पर लोकार्पण समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री देवासी ने कहा कि सिरोही जिला बकरी पालन के लिए विख्यात है और इस जिले में पशुपालन की विपुल संभावनाएं हैं। मुझे आशा है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित यह केन्द्र "जय किसान–जय जवान, जय पशुपालक" नारे को सार्थक बनाएगा। राज्य मंत्री ने उम्मीद जताई कि राज्य के गौशाला प्रबंधकों के प्रशिक्षण के लिए भी ये केन्द्र लाभकारी होंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि 10 लाख आबादी वाले सिरोही जिले में 9 लाख पशुधन है। 45 फीसदी आबादी कमजोर तबके के लोगों के इस जिले में पारंपरिक पशुपालन को तकनीकी आधारित बनाकर दुग्ध उत्पादन में राज्य को देश का सिरमोर बनाया जा सकता है। समारोह में विशिष्ट अतिथि रूप में शामिल जिला प्रमुख श्रीमती पायल परसरामपुरिया, नगर परिषद् सिरोही के सभापति श्री ताराराम माली ने भी अपे विचार रखे। भाजपा के जिलाध्यक्ष श्री लुम्बाराम चौधरी ने भी समारोह को सम्बोधित किया। इस अवसर पर समाजसेवी श्री रघुनाथ माली, राज्य पशुपालन विकास बोर्ड के सदस्य श्री नारायण देवासी, पंचायत समिति सदस्य श्री कुलदीप सिंह और पालड़ी के उप सरपंच श्री जीतेन्द्र सिंह भी मौजूद थे। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि इस केन्द्र में तीन पशुचिकित्सा विशेषज्ञ और तकनीकी स्टाफ की सेवाएं सुलभ करवाकर पशुओं के रोग निदान के लिए पशु आहार, दूध, खून व मल–मूत्र की जांच सुविधा भी प्रदान की जा सकेगी। समारोह में वेटरनरी कॉलेज नवानियां के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. नागदा, निदेशक कार्य एम. राम सहित डॉ. सुदीप सोलंकी, डॉ. परमाल सिंह व नवानियां के विशेषज्ञ शामिल हुए। इस अवसर पर आयोजित कृषक पशुपालक गोष्ठी में 150 से अधिक पशुपालकों ने भाग लिया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में 100 के.वी.ए. का सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित

बीकानेर में किसी संस्थानिक क्षेत्र में 100 किलोवाट क्षमता का पहला सौर ऊर्जा संयंत्र वेटरनरी विश्वविद्यालय में स्थापित किया गया है। पूर्व में राजुवास परिसर में वर्षा जल संग्रहण तंत्र स्थापित करने के बाद अब सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर ऊर्जा और जल बचत उपायों को लागू कर राज्य में विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। राज्य सरकार के उपक्रम राजस्थान इलेक्ट्रॉनिक एवं इंस्ट्रूमेन्टस लिमिटेड द्वारा राजुवास परिसर स्थित भवन की छत्तों पर 400 सौर ऊर्जा के पैनल लगाए गए हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि इस सौर ऊर्जा संयंत्र से 1.40 लाख यूनिट विद्युत का वार्षिक उत्पादन हो सकेगा। उन्होंने बताया इस संयंत्र को इन्टर ग्रिड से भी जोड़ा गया है, जिससे विश्वविद्यालय में विद्युत खपत के बाद और अवकाश दिवसों में उत्पन्न होने वाली विद्युत डिस्कॉम को दी जा सकेगी। प्रो. गहलोत ने बताया कि यह सौर ऊर्जा संयंत्र ऊर्जा की बचत, ध्वनि और जलवायु प्रदूषण से मुक्त तथा इको फ्रेन्डली है। विश्वविद्यालय में वर्तमान में होने वाले विद्युत व्यय की बचत से लाखों रूपये का राजस्व लाभ होगा। यह संयंत्र 25 वर्ष तक की कार्य क्षमता लिये हुए है। वर्तमान में इसकी कुल लागत लगभग 80 लाख रूपये है। इसमें केन्द्रीय नवीन और नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा राजस्थान नवीन ऊर्जा निगम लिमिटेड के मार्फत 24 लाख रूपये राशि का अनुदान भी देय है।

कोटा संभाग में पशुपालन परिदृश्य, वर्तमान एवं भविष्य पर कार्यशाला का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं पशुपालन विभाग कोटा के संयुक्त तत्वावधान में कोटा संभाग में पशुपालन परिदृश्य, वर्तमान व भविष्य विषय पर 26 अप्रेल को कार्यशाला का आयोजन किया गया। निदेशक, प्रसार शिक्षा प्रो. डॉ. आर.के. धूड़िया ने बताया कि वर्तमान में पशुपालन परिदृश्य का विश्लेषण कर, नतीजों के आधार पर भविष्य की पशुधन सम्बन्धी योजनाऐं बनाकर पशुपालक व पशुधन को सुदृढ़ किया जा सकता है। कार्यशाला के दौरान पशुपालन विभाग, कोटा संभाग के अतिरिक्त निदेशक, (क्षेत्र) डॉ. राम गोप मीणा, उपनिदेशक डॉ. अनिल शर्मा व डॉ. अशोक शर्मा, कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. आई. एन. गुप्ता, राजस्थान कॉपरेटिव डेयरी फैडरेशन के श्री गजेन्द्र शर्मा उप प्रबंधक, राजस्थान कॉपरेटिव डेयरी फैडरेशन के प्रबंधक श्री संजीव सिंह व सुरेन्द्र शर्मा, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह व पशुपालन विशेषज्ञ डॉ. महेन्द्र गर्ग ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यशाला में कोटा संभाग के चारो जिलों कोटा, बून्दी, बांरा, झालावाड़ से पशुपालन के संयुक्त व उपनिदेशक, अन्य विभागों के भी अधिकारियों ने कार्यशाला में मंथन कर वर्तमान व भविष्य के परिदृश्य के बारे में विस्तृत चर्चा कर भविष्य की योजनाओं के क्रियान्वयन के बारे में एक प्रारूप तैयार किया जिससे की भविष्य में कोटा संभाग पशुपालन के क्षेत्र में सर्वोपरि हो सके। वी. यू.टी.आर.सी., कोटा के प्रभारी अधिकारी डॉ. अतुल अरोड़ा व डॉ. निखिल श्रृंगी ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में "एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकताः जागरूकता से क्रियान्विति" थीम पर विश्व पशुचिकित्सा दिवस 29 अप्रैल को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकता बढने से मानव व पशु स्वास्थ्य और कृषि पर हो रहे विपरीत प्रभावों को लेकर पूरे विश्व में चिंतन हो रहा है। इसके कारण उभरती बीमारियों की रोकथाम में पशुचिकित्सा व्यवसाय की भी अहम भूमिका है। एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकता की रोकथाम के लिए और अधिक अनुसंधान और नई आणविक खोजों की जरूरत है। प्रो. गहलोत ने कहा कि इसके प्रति लोगों में भी जागरूकता आ रही है तथा "एक स्वास्थ्य" थीम के तहत मानव, पशु और कृषि की समग्र सोच के साथ एकजुटता लानी होगी। समारोह के विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल ने कहा हमें एक "एकल स्वास्थ्य" कार्यक्रम को मान्यता देकर कार्य करने की जरूरत है। एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकता की उभरती चुनौतियों के प्रति लोगों को जागरूक कर एन्टीबायोटिक दवाईयों का न्यायोचित उपयोग किया जाना चाहिए। प्रो. ए.के. कटारिया ने एन्टीबायोटिक प्रतिरोधकताः जागरूकता से क्रियान्विति पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया, निदेशक क्लिनिक्स प्रो. जे.एस. मेहता ने भी विचार रखे। इस दिवस पर आयोजित वेटरनरी छात्र–छात्राओं की भाषण, क्विज और पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। आयोजन सचिव डॉ. अशोक डांगी ने बताया कि विरबैक एनीमल हैल्थ लि. द्वारा कार्यक्रम प्रायोजित किया गया। समारोह में फैकल्टी सदस्य और छात्र–छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 12, 13, 18, 22, 25 एवं 28 अप्रेल को गांव बींजावास, सदाउ, लोसना–छोटा, घडणाऊ, जोगलिया तथा लुटाणापूर्ण गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 209 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 6, 11, 18, 19, 26 एवं 28 अप्रेल को गांव 27 ए, 10 जेड, भगवानसर, समेजा कोठी, सेधर एवं ठेठार गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 53 महिला पशुपालकों सहित कुल 180 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 17, 19, 22 एवं 25 अप्रेल को गांव आमली, नादिया, रामपुरा एवं खाम्बली गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 10, 12, 13, 15, 19 एवं 20 अप्रेल को गांव तरनाऊ, अकोरा, कमेड़िया, घाडरिया, शिवनगरी एवं डडेल में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 133 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा 5 गांवों में प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 21 अप्रेल को गांव रसूलपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 27 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा 224 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 13, 15, 17, 18, 20 एवं 21 अप्रेल को गांव रासतापाल, खलील, बनकोड़ा, अतिंया, बोडीगामा एवं अमृतिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 224 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 18, 20, 22 एवं 24 अप्रेल को गांव बरौली धाऊ, कारई, मैरथा, निठारी तथा मांगरेज खुर्द गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 128 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में 272 पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 11, 12, 13, 18, 19, 20 एवं 21 अप्रेल को गांव चुली, हरभगतपुरा, सुखनिवासपुरा, जोपड़िया, खुहडा, हमीरपुरा एवं देवली भंची गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 272 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 12, 13, 17, 22, 24 एवं 29 अप्रेल को चक–247 आरडी, 1 सी.के.डी, गोपलाना, खोडाला, पिपेरा एवं मल्कीसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 193 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 12, 13, 15, 18, 19, 22 एवं 24 अप्रेल को जालीपुरा, देवलीअरब, भगवानपुरा, रंगपुर, बरोडिया, सुवाना एवं हनोथिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 201 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 5, 6, 7, 10, 11, 12 एव 15 अप्रेल को गांव लांगछ, हिंगोरिया, नारेला, कश्मोर, गोसण्डा, पंचदेवला तथा भण्डारिया गांवों में तथा 3 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 273 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 364 पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 7, 10, 11, 13, 15, 19 एवं 21 अप्रेल को गांव लाडमपुरा, बराबट, दुवाटी, दयेरी, नरसिंगगढ़, कछपुरा, भिंलगवा एवं सकतपुर गांवों में तथा 18 अप्रेल को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 364 पशुपालकों ने भाग लिया।

ग्रामीणों ने सीखा बटेर पालन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के सजीव पशु जैव विविधिकरण केन्द्र द्वारा 'मेरा गांव मेरा गौरव' योजना की टीम संख्या–8 द्वारा "जापानी बटेर पालन एक लाभकारी व्यवसाय" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 अप्रेल को कांवनी गांव में आयोजित किया गया। परियोजना की प्रमुख अन्वेषक डॉ. बसन्त बैस ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा जापानी बटेर के आहार, आवास–प्रबंधन, विभिन्न प्रजातियों तथा वर्तमान परिपेक्ष्य में जापानी बटेर की उपयोगिता की जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण में 40 पशुपालकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। समापन पर सरपंच दिलदार खाँ ने विश्वविद्यालय टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

ग्रीष्म ऋतु में दुधारू पशुओं के रख–रखाव पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु विविधिकरण सजीव मॉडल आर.के.वी. वाई–15 के द्वारा ग्राम पांचू में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रमुख अन्वेषक प्रो. बसन्त बैस ने बताया कि पांचू गांव में ग्रीष्म ऋतु में दुधारू पशुओं के रख–रखाव विषय पर 100 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया जिसमें 28 महिला पशुपालक व 72 पुरूष पशुपालकों ने भाग लिया।

पशुओं में भी एंटीबायोटिक संवेदनशीलता परीक्षण जरूरी

जीवाणुओं में निरंतर बढती एंटीबायोटिक दवाओं के विरूद्ध प्रतिरोधकता के कारण विभिन्न एंटीबायोटिक बेअसर होती जा रही है। फलस्वरूप उचित परिणाम नहीं मिल पाते है, पशुओं में लम्बे समय तक इलाज चलता रहता है जिससे कारण पशुपालक को आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। पशुओं के इलाज में अत्याधिक एंटीबायोटिक दवाओं का प्रयोग जीवाणुओं में इन दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ा देते हैं।

एंटीबायोटिक संवेदनशीलता परीक्षण (ABST) बहुत ही उपयोगी प्रयोगशाला परीक्षण है जिसके द्वारा किसी भी एंटीबायोटिक का जीवाणुओं पर प्रभाव माप कर सबसे प्रभावशाली दवा का चयन किया जाता है और वही दवा उस रोगी पशु के इलाज के लिए उपयोग करने की सलाह दी जाती है। रोगी पशु के दूध, मूत्र, मवाद या किसी भी अन्य नमूने को प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के एंटीबायोटिक्स के खिलाफ जाँच की जाती है और यह पता लगाया जाता है कि प्रयोग किये गये एंटीबायोटिक्स में कौनसी एंटीबायोटिक सबसे ज्यादा प्रभावी है। इस प्रकार पशुओं में होने वाले विभिन्न जीवाणु जनित रोगों के इलाज के लिए उचित एंटीबायोटिक दवा का चयन व उपयोग करने में सहायता मिलती है। यह एक महत्वपूर्ण परीक्षण है और यह परीक्षण यदि इलाज शुरू होने से पहले किया जाए तभी श्रेष्ठ परिणाम मिलते है। इस परीक्षण के इस्तेमाल से जीवाणुओं में एंटीबायोटिक के प्रति बढ़ती प्रतिरोधी क्षमता पर भी अकुंश लगाया जा सकता है।

–डॉ. तरूणा भाटी
सहायक प्रोफेसर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर (मो. 9413602455)

मुर्गियों को तापघात से बचायें

मुर्गीपालन पशुपालकों के लिए एक बहुत ही लाभकारी व्यवसाय है। मुर्गीपालन के दो मुख्य प्रकार हैं : एक व्यावसायिक उत्पादन के लिए वृहद स्तर पर मुर्गीपालन तथा दूसरा : पशुपालक द्वारा अपने उपयोग के लिए छोटे स्तर पर घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन। गर्मियों में यदि वातावारण के तापमान को मुर्गीघर में नियंत्रित नहीं किया जाये तो अंडे व मांस उत्पादन में शीघ्र व भारी गिरावट आती है। यदि वातावरण का तापमान और अधिक हो जाता है तो मुर्गियां तापघात के कारण मौत का शिकार होती हैं। वृहद स्तर पर किये जाने वाले मुर्गीपालन में वातावरण के तापमान को नियंत्रित करना मुश्किल व मंहगा होता है जबकि छोटे स्तर पर घर के पिछवाडे में यह काम आसानी से किया जा सकता है। मुर्गियों से अच्छा उत्पादन 20–25 डिग्री सेंटिग्रेड वातावरणीय तापमान पर मिलता है। इस समय वातावरण का तापमान 40 डिग्री सेंटिग्रेड या इससे अधिक होने से मुर्गियों में तापघात एक आम समस्या है। तापघात से प्रभावित मुर्गी बैचेन होकर सुस्त हो जाती है, दाना खाना बंद कर देती है, साँस तेज चलती है, और मुहं खुला रखती हैं, और अंडा उत्पादन लगभग शून्य हो जाता है।

पशुपालकों को चाहिए कि इस मौसम में मुर्गीघर का तापमान नियंत्रित करें। इसके लिए वे कूलर अथवा फोगर का इस्तेमाल करें, मुर्गीघर में स्वच्छ हवा का आदान–प्रदान सुनिश्चित करें, मुर्गीघर में नमी ज्यादा ना हो पाये व घुटन ना हो, खिड़की–दरवाजों पर पानी से भीगी पल्ली लगायें और सूखने पर बार–बार भिगोयें, मुर्गियों को पीने के लिए स्वच्छ व ठण्डा पानी उपलब्ध करायें। रात के समय आवश्यकता से अधिक रोशनी ना करें और मुर्गीघर की छत लोहे की शीट की है तो मुर्गीपालक विशेष ध्यान रखें और छत पर सूखा–घास व पल्ली इत्यादि रखें। इस प्रकार गर्मी में मुर्गीघर का तापमान नियंत्रित कर मुर्गीपालक तापघात से होने वाले नुकसान से बच सकते हैं।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र

जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र, राजुवास की स्थापना नवम्बर 2012 में पशुधन उत्पाद तकनीकी विभाग के अन्तर्गत हुई। यह केन्द्र राज्य सरकार के योजना मद से वित्त पोषित है। इसका उद्देश्य प्रदेश में जैविक पशुपालन को बढ़ावा देना तथा इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के शोध कार्य करना व भिन्न भिन्न प्रकार के जैविक पशु उत्पादों का निर्माण भी करना है जिससे प्रदेश के किसान खुशहाल हों तथा सभी उपभोक्ताओं को स्वस्थ व गुणवत्तापूर्वक जैविक पशु उत्पाद प्राप्त हो सकें। इस क्रम में इस केन्द्र द्वारा अब तक कई प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम मुख्यालय व गांवों तथा गौशालाओं में जाकर किये गये हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों से अब तक कुल 734 किसान, पशुपालक व गौशालाकर्मी लाभान्वित हुए हैं। साथ ही इस केन्द्र द्वारा कई क्षेत्रों से दूध के नमूने लेकर उनमें पाए जाने वाले कीटनाशी व पीड़कनाशियों का परीक्षण भी करवाया है। केन्द्र द्वारा प्रदेश में कुछ कलस्टर चिन्हित किये गये हैं जहां पर जैविक पशुपालन शुरू किया जा सकता है। केन्द्र द्वारा एक प्रयोगशाला की स्थापना की गई है जिससे भविष्य में दूध में आने वाले एंटिबाईटिक्स व एफलाटोक्सिन के अवशेषों की जांच की जा सकेगी। इस क्षेत्र में शोध कार्य भी किया जायेगा। केन्द्र द्वारा अब तक विभिन्न विषयों पर कुल सात प्रकार के पुस्तक, पोस्टर, लीफलेट, पेम्फलेट की 8000 प्रतियां सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित की गई हैं जो केन्द्र द्वारा आयोजित होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा पशु व कृषि मेलों में किसानों व पशुपालकों को वितरित की जा रही हैं। इस केन्द्र के विषय विशेषज्ञों द्वारा पशुपालकों को समय समय पर जैविक पशुपालन व जैविक पशु उत्पाद तकनीक के बारे में बताया जा रहा है। केन्द्र द्वारा अन्य शोधकार्य तथा जैविक पशु उत्पादों का बाजार बढ़ाने के लिए औद्योगिक व व्यवसायिक लोगों से भी सम्पर्क किया गया है। जिससे पशुपालकों को आसानी से जैविक पशु उत्पादों के विक्रय अवसर तथा पूरा मूल्य प्राप्त करने के लिए बाजार उपलब्ध हो सके।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2017

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनू, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चूरू, अजमेर, बीकानेर, हनुमानगढ़, अलवर
पी.पी.आर. रोग	बकरी	सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जयपुर
गलघोंटू	भैंस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, भीलवाड़ा, सीकर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, पाली, बून्दी, झुंझुनू, टोंक, हनुमानगढ़, कोटा, बारां
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जयपुर, हनुमानगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, राजसमन्द, चित्तौडगढ़
बॉटूलिस्म	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर, बाड़मेर
न्यूमोनिक पास्चुरेलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, जालौर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, धौलपुर, हनुमानगढ़, भीलवाड़ा,
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, बून्दी, अनूपगढ़, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, भरतपुर, सीकर
अन्तः परजीवी– गोलकृमि, पर्णकृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी,	बून्दी, चित्तौडगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, बारां, हनुमानगढ
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनू, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, टोंक, जयपुर, अलवर, बाड़मेर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
तापघात व निर्जलीकरण	सभी पशु–पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें
सोनाड़ी भेड़ : गौरव प्रदेश का

सोनाड़ी नस्ल की भेड़ राजस्थान के उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाडा तथा चित्तौड़गढ़ जिलों में पाई जाती है। उत्तरी गुजरात में भी सोनाडी भेड़ देखी जा सकती है। यह नस्ल मजबूत कदकाठी वाली व मालपुरा नस्ल से छोटी होती है तथा इसकी टाँगे लम्बी होती है, जिसके कारण स्थानीय लोग इसे लापड़ी भी कहते हैं। इसका मुँह हल्के भूरे रंग (सुनहरा) का होता है तथा इसमें भूरापन गर्दन के मध्य तक फैला होता है, सुनहरे रंग के मुँह के कारण ही इस नस्ल का नाम सोनाड़ी पड़ा है। इनके कान लम्बे चपटे तथा लटके हुए होते हैं। सामान्यतया कान पर उपास्थि का अनुलग्नक पाया जाता है। नर व मादा दोनों में ही सींग नहीं पाये जाते। इनकी ऊन सफेद तथा रेशा मोटा, खुरदरा बाल जैसा होता है। पेट व टाँगों पर ऊन नहीं पाई जाती है। रेशे की मोटाई लगभग 52 माइक्रॉन व लम्बाई लगभग 5 सेमी. होती है। एक भेड़ सालाना लगभग एक किलो ऊन उत्पादित कर देती है। नर व मादा क्रमशः 10 तथा 12 माह की आयु पर प्रजनन करने लायक हो जाते हैं तथा समान्यतया एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। वयस्क नर मादा का शारीरिक भार क्रमशः लगभग 40 व 30 किलो होता है। सोनाडी नस्ल की भेड को मांस व ऊन उत्पादन के लिए पाला जाता है। स्थानीय लोग इसे भागली (भाग्यवाली) भी कहते हैं क्योंकि यह पशुपालक की अजीविका में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

सफलता की कहानी
मनीराम हैं बेरोजगारों के प्रेरणा स्रोत

चूरू जिले की रतनगढ़ तहसील के लाछड़सर ग्राम के 40 वर्षीय मनीराम पुत्र श्री सोहनराम ने अपनी मेहनत और दूरदर्शिता से ऐसा मुकाम हासिल कर लिया है जो सबके लिए प्रेरणास्त्रोत है। मनीराम का मानना है कि यद्यपि उनके पास 13 बीघा बारानी जमीन थी परन्तु कृषि वर्षा पर निर्भर थी जिससे अधिक पैदावार न होने के कारण आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी। उनका कहना है कि उनके परिवार में 1–2 गायें सदैव रहती थी, जिनका उपयोग घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता था। खेती–बाडी से अधिक आय न होने के कारण उन्होंने पशुपालन के महत्व को समझा। उनका झुकाव हमेशा देशी नस्ल के पशुओं की तरफ रहा और उन्होंने वर्ष 2010 में एक साहीवाल गाय खरीदी और समय के साथ–साथ इनके घर में साहीवाल पशुओं की संख्या भी बढ़ती रही। इसी दौरान मनीराम वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू के सम्पर्क में आए। वीयूटीआरसी, चूरू से इनके गांवों में दो प्रशिक्षण शिविर लगाए, जहां इन्होने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इनके पशुपालन की तरफ झुकाव को देखते हुए वीयूटीआरसी, चूरू ने इनको राजुवास, बीकानेर में दो बार (छः दिवसीय व दो दिवसीय) प्रशिक्षण के लिए भेजा। मनीराम के अनुसार वीयूटीआरसी, चूरू व राजुवास, बीकानेर के प्रशिक्षण से उन्हे काफी फायदा हुआ है। प्रशिक्षण में पशुओं के रख–रखाव, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, पशुओं के नस्ल सुधार, संतुलित आहार, टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं व खनिज लवण के उपयोग की जानकारी प्राप्त की। वर्तमान में मनीराम के पास 15 साहीवाल गायें और 4 मुर्राह नस्ल की भैंसें हैं। मनीराम के अनुसार इन पशुओं से प्रतिदिन औसतन 1 क्विंटल दुग्ध उत्पादन लेते हैं और इस दुग्ध की बिक्री से आय अर्जित करते हैं। मनीराम ने वीयूटीआरसी, चूरू के परामर्श अनुसार पशु अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर (राजुवास, बीकानेर) से एक साहीवाल सांड भी खरीद लिया है। मनीराम का कहना है कि वीयूटीआरसी, चूरू व राजुवास, बीकानेर से मिली नवीन तकनीकों का उपयोग कर पशु प्रबन्धन कर रहे हैं। मनीराम अपने पशुओं के स्वास्थ्य और पोषण पर भी पूरी नजर रखते है। अपने पशुओं का पशु आहार, चारा बांटा स्वयं तैयार करते हैं। मनीराम का कहना है कि व समय–समय पर पशुओं का एफ.एम.डी., गलघोंटू, लंगड़ा बुखार का टीकाकरण करवाता है, जिससे पशुओं में किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं होती। पशुओं को समय–समय पर कृमिनाशी दवाई पिलाई जाती है जिससे दुग्ध के उत्पादन में वृद्धि होती है। उनका मानना है कि पशुधन उनके लिए ए.टी.एम के समान है। जिससे दूध की बिक्री से उन्हें प्रतिदिन आय होती है। आज के समय में मनीराम दुग्ध और घी की बिक्री करके प्रतिवर्ष लगभग 6.00 लाख रूपए कमा रहे हैं और उनका परिवार सम्पन्न व खुशहाल है। मनीराम पशुपालन की वैज्ञानिक जानकारियां अन्य ग्रामीणों को भी बांटते हैं। अपनी मेहनत के दम पर ही आज समाज में उनकी प्रतिष्ठा में चार चांद लगे हैं और बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिए मनीराम एक प्रेरणा के स्त्रोत हैं।

(सम्पर्क–श्री मनीराम, लाछड़सर, रतनगढ़ मो. : 9828373691)

निदेशक की कलम से...

पशु आहार और चारे का संग्रहण और संरक्षण करना होगा लाभकारी

पशु आहार और हरा चारा पशुओं की उत्पादकता को सीधे तौर पर प्रभावित करता है। रबी मौसम की कृषि उपज और घास–चारे की कमी का प्रभाव गर्मियों के अप्रेल, मई, जून और जुलाई में पड़ेगा। अतः पशुपालकों को पशु आहार और हरे चारे के संसाधनों का न्यायोचित उपयोग और संरक्षण किए जाने की जरूरत रहेगी। जिन पशुपालकों ने पूर्व में ही चारे के संरक्षण उपाय कर लिए हैं तो उन्हें किल्लत के समय में पशुओं के खान–पान पर अधिक खर्च नहीं करना पड़ेगा। अपने पालतु पशुओं की संख्या के आधार पर आहार और चारे की जरूरत का पूर्वानुमान लगाना फायदेमंद रहेगा। वर्तमान में उपलब्ध फसलों के अवशेषों (घास–चारा) का उचित संरक्षण कर लेना चाहिए। भविष्य की जरूरत के मुताबिक गर्मी के मौसम की फसल बिजाई के दौरान पर्याप्त चारे की फसलों की बुआई कर लेनी चाहिए। इससे ऊपरी जरूरत पूरी होगी और कमी के समय आपको अच्छा बाजार मूल्य भी मिलेगा। वैज्ञानिक विधियों के द्वारा लम्बे समय तक हरे चारे को परिरक्षित और संरक्षित किए जाने के लिए साइलेज बैग और 'हे' बनाने की तकनीक अपनानी चाहिए। अजोला हरे चारे की एक सरल और शीघ्र उत्पादन की विधि का उपयोग करना अत्यंत लाभकारी है। अजोला प्रोटीन से भरपूर पौष्टिक उत्पाद है। इसे अपने खेत, और घर में भी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। अजोला का उत्पादन किसान और पशुपालकों में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा हरे चारे के उत्पादन और संरक्षण की वैज्ञानिक विधियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित किए जाते हैं। ये सभी कार्यक्रम निःशुल्क हैं और इसमें, आप शामिल होकर लाभ उठा सकते हैं। विश्वविद्यालय में पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक का केन्द्र पृथक से कार्यशील है। विश्वविद्यालय की हैल्पलाईन के टोल–फ्री नम्बर 18001806224 दूरभाष से भी संपर्क कर आप मार्गदर्शन और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।**–प्रो. आर.के.धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414283388**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मई 2017** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायं 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो.(डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत** **9414138211** कुलपति, राजुवास, बीकानेर	कृषकों की आय बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक पशुपालन समय की जरूरत	04.05.2017
2	**प्रो. जी.एस. मनोहर** **9413659310** अधिष्ठाता, सीवीएएस., बीकानेर	पशुओं में खूनी परजीवी जनित बीमारियां व उनसे बचाव	11.05.2017
3	**डॉ. मीनाक्षी सरीन** **9214040208** विभागाध्यक्ष, पशु जैव रसायन विभाग,सीवीएएस, बीकानेर	मधुमक्खी पालन एक लाभदायक व्यवसाय	18.05.2017
4	**डॉ. दीपिका गोकलानी** **9413684447** पशु औषधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	गर्मी के मौसम में दुधारू पशओं का पालन–पोषण	25.05.2017

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया